REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

'नारी शिक्षा की पक्षधर योध्दा - मलाला युसुफजई' ('मलाला तुम मर नहीं सकती' कविता के संदर्भ में)

प्रा. झाकीरहुसेन मुलाणी
विठ्ठलराव शिंदे आर्टस कॉलेज, टेंभुर्णी ता. माढा, जि. सोलापूर ।

प्रस्तावना :

बहुमुखी प्रतिभा के हस्ताक्षर कॅवल भारती आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य के दलित साहित्यकार है। कॅवल जी कविता, पत्रकारिता और आलोचना के क्षेत्र में प्रसिध्द है। उन्हें ख्याती दलित चेतना के कारण है। उनकी कविता जाति एवं वर्ण व्यवस्था, शोषण आदि के प्रति विद्रोह का रूख अपनाती है। अन्य दलित साहित्यकारों की तरह उनके साहित्य पर मार्क्स, आंबेडकर और म. फुले के विचारों का प्रभाव है। मनुवादी वृत्ति के प्रति उच्चस्तर का विद्रोह प्राप्त होता है। साहित्यकार शोषण के खिलाफ कलम रूपीशस्त्र का प्रयोग बिना झिझ ाक करते है। कँवल भारती का साहित्य आझादी, समानता और भाईचारे की माँग करता है। उनका साहित्य बेबाक बयान होता है। 'पिंजडे का व्दार खोल देना', 'शम्बूक', 'बहिष्कार', 'मुक्ति संग्राम' और 'मलाला तुम मर नहीं सकती' बहुचर्चित कविताएँ है।

९ अक्तुबर, २०१२ को पाकिस्तानी तालिबानी दहशतगर्दी संघटन तहरिक तालिबान पाकिस्तान (टी.टी.पी.) के दहशतगर्दी 'अताउल्ला' ने बस में घूसकर मलाला पर गोली चलाई। इसमें मलाल युसुफजई की दो सहेलिया कायनात रिझाय और शाझीआ रमझान गोलियों के कारण जख्मी हो गयी। मलाला युसुफजई के सर में गोली घुस गई किन्तु जिसमें जिने की जिजिविषा होती है वह आसानी से नहीं मरती। उसे इंग्लड के बर्मिंगहॅम के 'क्वीन एलिझाबेथ हॉस्पिटल' में भरती कराया था। वहॉ के डॉक्टरों के टीम ने बडे प्रयासों के उपरान्त मलाला को जीवनदान दिया था। इससे तालिबान का आफगानिस्तान और पाकिस्तान में नारी शिक्षा का विरोधी चेहरा दुनियॉ के सामने आया था। नापाक इरादों की तहत एक हँसती-खेलती बच्चियों को गोलियों से भूनते समय दहशतगर्दियों को दहशत निर्माण में सफलता तो मिली किन्तु उनके इरादो को मारने में असफल रहें। मारनेवालों से बचानेवाला बहुत बडा होता है। यह घटना मलाला युसुफजई को अस्मान की ऊँचाई तक ले गयी। दुनिया में पाकिस्तान और तालिबानी दहशतगर्दियों के प्रति काफी छी-थू हो गयी थी। मलाला छोटी बच्ची है, दहशतगर्दियों के निशाने पर क्यों आयी? उसकी तह में पहुँचने के उपरान्त की जानकारी डरावनी है, वह पाकिस्तानी ही नहीं दुनियॉ की हर लडकी के शिक्षा की पक्षधर थी। मुस्लीम स्त्री को पुरूषों ने शिक्षा से दुर रखकर उसे केवल भोग की वस्तु बना दिया था। मलाला ने इसके खिलाफ बगावत की थी। उसका नतीजा वह दहशतगर्दियों संघटन 'तहरिक तालिबान पाकिस्तान' के निशाने पर आयी थी।

उसके पिता झियाउद्दीन और माता तुर्पेकई की इक्लौती और प्यारी बेटी है। उसके पिता एक कॉलेज में आध्यापक है। मलाला को शिक्षा मिलनी चाहिए के वे भी पक्षधर है किन्तु धर्मांध तालिबानी उनके कार्य से खूश न थे। उन्होंने युसुफजई के पूरे परिवार को बार-बार मारने की धमकियॉ दी थी। मलाला के दोनों भाई खुशाल और अटल पूरी तरह घबराये थे। झियाउद्दीन ने अपनी बेटी का नाम "अफगानस्तानी नारी योध्दा 'पस्तुनी जोन ऑफ आर्क' नाम से प्रसिध्द मलालाई के प्रभाव से रखा था। शायद मलाला के पिता ने दहशतगर्दियों से अहिंसा के शस्त्र से लढने के लिए ही जन्म दिया हो। वह अपनी बेटी को घर से कब्र तक नहीं, वरण घर से दुनियॉ तक पहुँचाना चाहते थे। उसीका नतीजा २०१४ का सर्वोच्च नोबेल सम्मान से उसे नवाजा गया। मलाला युसुफजई नोबेल सम्मान प्राप्त करनेवाली केवल सत्रह साल लडकी है। उसे कम उम्र में नोबेल सम्मान मिला है। भारतीय समाज सुधारक कैलाश सत्यार्थीजी बच्चों के हक की लडाई अपने जीवन भर लडते आ रहे, उनके साथ मलाला युसुफजई को नोबेल सम्मान २०१४ में प्राप्त हुआ। पाकिस्तान के स्वात प्रांत में जन्मी मलाला अपने अव्दितीय कार्य के कारण अस्मान की बूलंदियों को आसानी से छू सकी।

इस घटना को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य के दलित साहित्यकार कॅवल भारती जी ने 'मलाला तुम मर नहीं सकती' नामक

कविता लिखी है। उत्तर रामायण का बहुचर्चित और विवादित पात्र शम्बूक और मलाला युसुफजई के कार्य में कविने समानता दिखलाई है। शम्बूक को पढाई की वजह से रामयुग के ब्राह्मणों के क्रोध का शिकार बनना बडा तो मलाला युसुफजई को पाकिस्तानी तालिबानियों के क्रोध का। शम्बूक ने रामराज्य में मनुस्मृति और ब्राह्मणवादी तत्वों का विरोध कर शुद्रों की शिक्षा का प्रारंभ कर दिया था। वही कार्य पाकिस्तान की मलाला युसुफजई ने लडकियों की शिक्षा के लिए किया है। पाकिस्तानी तालिबानी हमेशा स्त्री शिक्षा का विरोश करते आये है।

'मलाला तुम मर नहीं सकती' कविता का शीर्षक ही मलाला की आप बीत और मुस्लिम स्त्रियों के शिक्षा को दुनियाँ के कटघर में खडी करता है। समाज के प्रति दायित्व पूरा करनेवाली मलाला की सोच और वास्तव भावना को मारना असंभव ही तो है। शायद उसके शरीर को तालिबानी गोलियों से छली-छली कर सकते है। फिर भी सोच जिन्दा ही रहती है। फलत: कवि कँवल भारती कहते है कि 'मलाला तुम मर नहीं सकती।' राम ने शम्बूक की हत्या की किन्तु उसकी सोच पुराणकाल से आज तक दलित- पिडीत समाज का पथ प्रदर्शित करती रही। राम ने भले ही उसके शरीर को मिटाया हो किन्तु उसकी सोच को मार न सके। यह ब्राह्मणवादी विचार के मुख पर पुराणकाल में कसकर मारा तमाचा ही था। मलाला के संदर्भ में दुनिया में यही तो हुआ। भारत में वर्णव्यवस्ता के पुजारी और पाकिस्तान और आफगाणिस्तान में तालिबानी इन घटनाओं में हाथ मलते ही रह गये। यह भारतीय वर्णवादी व्यवस्था और पाकिस्तानी तालिबानियों की सबसे बडी हार थी। कॅवल भारती कहती है ङ

"तालिबानी तुमसे डर गया मलाला
तुम्हारी तहरीक ने तालिबान को परास्त कर दिया
तुमने इस्लाम को बचा लिया ।
तुम इस्लाम की अप्रतिम योध्दा हो
तुम नहीं मर सकती मलाला।"

समाज विकास में नारी अपना योगदान नहीं देती तब तक समाज विकासोन्मुख नहीं होता यह सोच डॉ. आंबेडकर जी की थी। भारतीय समाज व्यवस्था भी एक समय में स्त्री शिक्षा विरोधी थी। पाकिस्तान में तालिबान नारी शिक्षा के खिलाफ थे। उनकी स्त्री के प्रतिभावना घर से कब्र तक पहुँने की रही है। कॅवल भारती मलाला को इस्लाम का योध्दा मानते है, साथ ही में शिक्षा विरोधी इस्लामी तत्वों को झकझोर कर दुनियाँ के हाशिये पर समस्या को खडा करनेवाली मलाला को इस्लाम बचाने का कारण भी बतलाते है। धर्म के खिलाफ हक की लडाई शम्बूक और मलाला ने एक-सी लडी और जीत भी गए। समाज के हक की लडाई लढनेवाले योध्दाओं को इतिहास सम्मान देता है और युग-युग तक उनके विचारों को जीवित रखता है। कवि कहता है ङ

"तुम पाक के मुस्लिम इतिहास में हमेशा जीवित रहोगी
जैसे भारत के हिन्दू इतिहास में शम्बूक जीवित है।"

यह काव्य पंक्तियाँ इन योध्दाओं का गौरव करनेवाली है। धर्म के ठेकेदार इनके गौरवपुर्ण कार्यो से आहत होते है। जिससे मानवता उध्दार हो ऐसा कार्य समाज के प्रति शम्बूक और मलाला ने किया है। पाकिस्तान के धर्मांध लोग स्त्री शिक्षा विरोधी है तो भारत में दलितों को शिक्षा से दूर रखा था, दलितों का शिक्षा लेना आपराध माना गया था। व्यवस्था के प्रति इन दो पात्रों ने की बगावत स्त्री शिक्षा और दलित शिक्षा की पक्षधर है।

कवि का मानना है कि पाकिस्तान में स्त्री शिक्षा से तालिबान भयभित है और भारत में ब्राह्मण व्यवस्था। आंबेडकर ने सूत्र बताया था, सीखों, संघटन करो और व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करते रहो। ज्यों व्यवस्था मानवता और मानव को घोर अन्धेरे में रखना चाहती थी, उसका विरोध मलाला और शम्बूक जैसे योध्दाओंने अपने-अपने समय में किया है। कवि कॅवल भारती मलाला से कहते है -- मलाला

"तिलमिलाया था ब्राम्हण
जैसे तालिबान तिलमिलाया तुमसे।"

वास्तववादी कवि और कविता की विशेषता यह होती है कि यथार्थ भावभूमि पर खडी होकर व्यवस्था के खिलाफ लडती है। महज उसमें शब्द साधन साधारण होते है किन्तु उद्देश महान होता है। कॅवल भारतीजी ने भी शब्द रचना से अधिक सच्चाई पर ध्यान दिया है। जिसके वजह से तालिबानी और ब्राह्मणवादी चेहरे का नकाब उतर गया है, यहाँ दुनिया के सामने व्यवस्था को नंगा किया है। मलाला और शम्बूक व्यवस्था के लिए खतरा है -- जैसे --

"तुम खतरा बन गयी थी तालिबानी सत्ता के लिए
ऐसे ही शम्बूक बन गया था ब्राह्मण की सत्ता के लिए खतरा।"

कॅवल भारती को विश्वास है कि व्यक्ति के हत्या से विचारों का अन्त नहीं नये सीरे से उदय होता है। कॅवल भारती के शब्दों में

"ब्राह्मण की सत्ता बचाने के लिए
राम को मारना पडा था शम्बूक को
जैसे तालिबान को तुम्हें मारना पडा
अपनी सत्ता बचाने के लिए।"

कवि विश्वास व्यक्त करता है कि इ

"लेकिन, तुम मरोगी नहीं मलाला
मरेगा तालिबान।"

कॅवल भारती जी व्यवस्था के खिलाफ खतरा उठानेवाली मलाला की सोच को जन्मोजन्मों तक जीवित रहने का विश्वास दिलाते है। शम्बूक तो पुराण काल का दलित है, जिसकी चेतना ने ब्राह्मण व्यवस्था को झकझोर दिया था। इतना ही नहीं दाकियॉनूसी विचारकों के दिमाग पर लगे तालें को खोलनेवाले योध्दा शम्बूक और मलाला है। शम्बूक दलित चेतना का बीज है तो मलाला इस्लाम की नारी जाति के लिए शिक्षा का बीज है, ज्यों आनेवाले समय में गुलाममी को तार-तार कर देग। 'मलाला तुम मर नहीं' सकती कविता की अंतिम पंक्तियाँ अस्मिता की लडाई लडनेवाले मलाला युसुफजई और पुराणकालिन दलित चेतना के प्रतीक शम्बूक के कार्य के लिए समर्पित है। कवि कहता है -- मलाला

"जागृत हो तुम अब तुम हर मुसलमान लडकी में
जैसे शम्बूक अब हर शुद्र में जागृत है
अस्मिता और स्वाभिमान के रूप में।
तुम भी मलाला हमेशा जीवित रहोगी
मुस्लिम लडकियों में अस्मिता और स्वाभिमान की
मशाल बन कर।"

निष्कर्ष :-

कवि कँवल भारती ने 'मलाला तुम मर नहीं सकती' कविता के लिए इतिहास और पुराण की घटनाओं को साधन बनाया है। पुराणकालिन रामराज्य शुद्रो के शिक्षा का विरोध करता रहा। शम्बूक ने अपने खिलाफ की व्यवस्था को ललकारा, ज्ञान के बल पर ब्राह्मण मुनीजनों को परास्त किया। वह दलित चेतना का बीज है, जिसने भगवान कहलानेवाले राम को भी भयभित कर दिया था। वही कार्य पाकिस्तान की लडकी जिस पर दहशतगर्दियों ने गोलियाँ बरसायी थी, वह मलाला युसुफजई तालिबानी व्यवस्था के विरोध में स्त्री शिक्षा की माँग करती है। पाकिस्तान की इस धार्मंध चेहरे का नकाब उतारती है। उसकी सोच है कि दुनियॉ के विकास में शिक्षा ही सबसे बडा एवं कारगर साधन है। 'मलाला तुम मर नहीं सकती' के मूल में दलित चेतना और मुसलमान लडकियों की शिक्षा रही है। मूलतत्ववादी विचारों का विरोध कर शिक्षा का हक सभी जाति धर्मो के बच्चों को दिलाना कवि का उद्देश रहा है। पुराणकाल से पुरातत्ववादी शुद्रों के शिक्षा का विरोध करते रहे, आंबेडकर जी के विचारों के प्रभाव स्वरूप शिक्षा क्षेत्र अब किसी वर्ण की जागीर नहीं है। शम्बूक जीवित रह सकता है तो मलाला तुम भी नहीं मर सकती। व्यक्ति का वर्ण और लिंग मायने नहीं रखता, मायने रखती है उसकी मानवतावादी दृष्टि। आज मलाला की सारी दुनिया हिमायत करती है किन्तु मलाला को उसके लिए बहुत बडी किमत चुकानी पडी है।

संदर्भः-

१) 'मलाला तुम मर नहीं सकती' (कविता) कँवल भारती।
२) हिन्दी वेब